प्राकृतिक खेती का महत्व, आवश्यकता एवं इसके प्रमुख लाभ

कृषि कुंभ (सितंबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 04, पृष्ठ संख्या 29–33

प्राकृतिक खेती का महत्व, आवश्यकता एवं इसके प्रमुख लाभ

पल्लवी भारती[1] एवं पंकज कुमार राय[2]
[1]बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, काके, रांची, झारखण्ड
[2]कृषि विज्ञान केंद्र, सहरसा, बिहार, भारत।
Email Id: p.pallo1301@gmail.com

कर्ज और जहर बगैर खेती के कई रूप और नाम हैं – जैविक, प्राकृतिक, जीरो–बजट, सजीव, वैकल्पिक खेती इत्यादि। इन सब में कुछ फर्क तो है परन्तु इन सब में कुछ महत्वपूर्ण तत्व एक जैसे हैं। इसलिये इस पुस्तिका में हम इन सबको प्राकृतिक या वैकल्पिक खेती कहेंगे। प्राकृतिक खेती में रासायनिक खादों, कीटनाशकों और बाहर से खरीदे हुऐ पदार्थों का प्रयोग या तो बिल्कुल ही नहीं किया जाता या बहुत ही कम किया जाता है। परन्तु प्राकृतिक खेती का अर्थ केवल इतना ही नहीं है कि यूरिया की जगह गोबर की खाद का प्रयोग हो। इसके अलावा भी इस खेती के अनेक महत्वपूर्ण तत्व हैं जिनकी चर्चा हम आगे करेंगे।

एक बात शुरू में ही स्पष्ट करना आवश्यक है कि प्राकृतिक खेती अपनाने का अर्थ केवल हरित क्रांति से पहले के तरीकों, अपने बाप–दादा के तरीकों पर वापस जाना नहीं है। बल्कि इन पारम्परिक तरीकों को अपनाने के साथ–साथ पिछले 40–50 वर्षों में हासिल किए गए ज्ञान और अनुभव का भी प्रयोग किया गया है। प्राकृतिक खेती अपनाने का उद्देश्य यह है कि किसान को सम्मानजनक और सुरक्षित आमदनी मिले, छोटी जोत की खेती भी सम्मानजनक रोजगार और जीवन दे, हर इंसान को स्वास्थ्यवर्द्धक अैर पर्याप्त भोजन मिले। इसके अलावा पर्यावरण संतुलन में भी प्राकृतिक खेती का महत्वपूर्ण योगदान है।

इस तरह की खेती में कीटनाशक, रासायनिक खाद एवं हाईब्रीड बीज एवं अत्याधुनिक उपाय का प्रयोग नहीं होता है। यह खेती पूरी तरह प्राकृतिक संसाधनों पर आश्रित है। इसको जीरो बजट खेती के नाम से भी जाना जाता है। इस जीरो बजट खेती के जनक महाराष्ट्र के सुभाष पालेकर हैं। इस प्रकार की खेती के लिए किसान के पास कम से कम एक देशी गाय होनी चाहिए ताकि जरुरत के मुताबिक गोबर एवं गो–मुत्र संग्रह किया जा सके। अपने घर एवं आस–पास में उपलब्ध सामानों द्वारा जैविक खाद, दवा एवं संजीवक बनाकर फसलों में इस्तेमाल कर सकते हैं।

प्राकृतिक खेती क्यों?

प्राकृतिक खेती का मुख्य आधार देसी गाय है। प्राकृतिक खेती कृषि की प्राचीन पद्धति है। यह भूमि के प्राकृतिक स्वरूप को बनाए रखती है। प्राकृतिक खेती में रासायनिक कीटनाशक का उपयोग नहीं किया जाता है। इस प्रकार की खेती में जो तत्व प्रकृति में पाए जाते है, उन्हीं को खेती में कीटनाशक के रूप में काम में लिया जाता है।

प्राकृतिक खेती में कीटनाशकों के रूप में गोबर की खाद, कम्पोस्ट, जीवाणु खाद, फसल अवशेष और प्रकृति में उपलब्ध खनिज जैसे– रॉक फास्फेट, जिप्सम आदि द्वारा पौधों को पोषक तत्व दिए जाते हैं। प्राकृतिक खेती में प्रकृति में उपलब्ध जीवाणुओं, मित्र कीट और जैविक कीटनाशक द्वारा फसल को हानिकारक जीवाणुओं से बचाया जाता है।

खेती–बारी में रमासायनिक खाद एवं कीटनाशक प्रयोग से समस्याएँ

- इससे किसान का खर्चा आरै कर्ज बढ रहा है और बावजदू इसके आमदनी का कोई भरोसा नहीं है।
- रासायनिक खाद, कीटनाशक एवं हाइब्रीड बीज अत्यधिक मंहगे दर पर मिलती है।
- बैंक ऋण के जाल में पड़ने की वजह से किसानों की आत्महत्या मामलों में वृद्धि हुई है।
- रासायनिक खाद एवं कीटनाशक के प्रयोग हेतु तेजी से मिट्टी के उर्वरता कम और प्रदूषित हो रहा है तथा वातावरण में परिवर्तन हो रहा है।
- कंपनी पर रासायनिक उर्वरक, संकर बीज कीटनाशक के लिए निर्भरशीलता बढ रही है।
- संकर बीज के उपयोग की वजह से मिट्टी की पोषक तत्वों में कमी, हानिकारक कीटों की वृद्धि हो रही है।
- उन्नत मानदंड के स्थानीय फसल के बीज एवं किस्म धीरे–धीरे गायब होते जा रहे हैं।

- मिट्टी, पानी (डोबा, झील, नाला एवं नदी) एवं हवा से विभिन्न प्रकार के लाभकारी जीव जैसे– मछली, केचुआँ एवं अन्य कीट पतंगों की कमी हो रही है।
- रासायनिक खाद एवं कीटनाशक प्रभावित खान–पान से कई प्रकार के रोग से (इन्सान एवं अन्य सभी जीव–जानवर प्रभावित हुए हो रहे हैं।
- रसायन एवं कीटनाशक आधारित खेती टिकाऊ नहीं है। पहले जितनी ही पैदावार लेने के लिए लगातार पहले से ज्यादा रासायनिक खाद और कीटनाशकों का प्रयोग करना पड़ रहा है।
- रासायनिक खाद और कीट–नाशकों के बढ़ते प्रयोग से मिट्टी और पानी खराब हो रहे हैं। यहां तक कि मां के दूध में भी कीटनाशक पाये गये हैं। इस के कारण हमारा स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। इंसान और पशुओं में बांझपन बढ़ा है। कई पक्षी और जीव–जन्तु खत्म हो रहे हैं, यानी जीवन नष्ट हो रहा है। यह भी याद रखना चाहिये कि भोपाल गैस कांड जिस फैक्टरी में हुआ था, उसमें कीटनाशक ही बनते थे।
- रासायनिक खादों का निर्माण पेट्रोलियम–पदार्थो पर आधारित है और वे देर–सवेर खत्म होने वाले हैं। इसलिए आज नही तो कल रासायनिक खादों, यूरिया इत्यादि के बिना खेती करनी ही पड़ेगी।

एक और बात पाई गई है, प्राकृतिक खेती अपनाने में अग्रणी भूमिका निभाने वाले बहुत से किसान ऐसे हैं जिन्होने पहले रासायनिक खेती भी जोर–शोर से अपनाई थी, अनेक पुरस्कार प्राप्त किये परन्तु जब कुछ समय बाद उस में बहुत नुकसान होने लगा तब उन्होंने नये रास्ते तलाशने शुरू किये और अंततः कुदरती खेती पर पहुंचे। इससे रासायनिक खेती की सीमाएं स्पष्ट होती हैं।

इस समस्या के हल की तलाश का एक रास्ता आनुवांशिक रूप से संशोधित फसलों (जीएम फसलों), जैसे बी.टी. कपास या बी.टी बैंगन इत्यादि का भी है। जीएम फसलों का रास्ता ऐसी तकनीकों पर आधारित है जो न केवल किसानों की बड़ी और विदेशी कम्पनियों पर निर्भरता को और भी बढ़ा देगा, अपितु प्रकृति के साथ पहले से भी बड़ा खिलावाड़ है, ऐसा खिलवाड़ जो कई बार घातक सिद्ध भी हो चुका है।

टमाटर में मछली के अंश मिलाने से पहले बहुत सोच–विचार और लम्बी अवधि के अध्ययनों की जरूरत है। ये अध्ययन उन कम्पनियों से स्वतंत्र होने चाहिये जो ये तकनीक ला रही है। दुर्भाग्य से ऐसा हो नहीं रहा। वैसे भी देश में जीएम फसलों को और बढ़ावा देने से पहले बी.टी. कपास के अनुभव की पूरी समीक्षा होनी चाहिये। कई जगह इस के दुष्परिणाम भी सामने आये हैं।

प्राकृतिक तरीका द्वारा खेती–बारी : क्यों करें ?

- उत्पन्न खाद्यान्न में विटामिन, खनिज व पोषक तत्व उच्च मात्रा में होते हैं, खद्यान्न खाने में स्वादिष्ट लगते हैं।
- व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है एवं रोगों से मुक्त रहता है।
- इस खाद्यान को लम्बे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं।
- कम लागत में अधिक आय, होती है।
- बाजार के लिए कम जोखिम और दूसरों पर निर्भर शील नहीं रहना पड़ता है।
- स्वयं घर एवं आस–पास से बीज, पोषक तत्व और दवा की व्यवस्था कर सकते हैं।
- फसल के देशी नसलों का इस्तेमाल, बीज के लिए आत्मनिर्भर शील।
- सुरक्षित रुप से घर की महिला, काम लायक बच्चे भी जैविक खाद एवं दवा के तैयारी और प्रयोग में सहयोग दे सकते है। पर्यावरण, इन्सान एवं अन्य जीव पर पार्श्व प्रभाव नहीं पड़ता है।
- मित्रकीट, केचुआँ एवं अन्य जीव के सक्रिय भुमिका से मिट्टी की पोषक तत्व में बढ़ोतरी रोग एवं कीट प्रबंधन में मदद मिलती है।
- हमारी जमीन बंजर होने से बचती है।

प्राकृतिक खेती की आवश्यकता

- पिछले कई वर्षों से खेती में काफी नुकसान देखने को मिल रहा है। इसका मुख्य कारण हानिकारक कीटनाशकों का उपयोग है। इसमें लागत भी बढ़ रही है।
- भूमि के प्राकृतिक स्वरूप में भी बदलाव हो रहे है जो काफी नुकसान भरे हो सकते हैं। रासायनिक खेती से प्रकृति में और मनुष्य के स्वास्थ्य में काफी गिरावट आई है।
- किसानों की पैदावार का आधा हिस्सा उनके उर्वरक और कीटनाशक में ही चला जाता है। यदि किसान खेती में अधिक मुनाफा या फायदा कमाना चाहता है तो उसे प्राकृतिक खेती की तरफ अग्रेसर होना चाहिए।
- खेती में खाने पीने की चीजे काफी उगाई जाती है जिसे हम उपयोग में लेते है। इन खाद्य पदार्थों में जिंक और आयरन जैसे कई सारे खनिज तत्व उपस्थित होते है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए काफी लाभदायक होती है।

- रासायनिक खाद और कीटनाशक के उपयोग से ये खाद्य पदार्थ अपनी गुणवत्ता खो देते है। जिससे हमारे शरीर पर बुरा असर पड़ता है।
- रासायनिक खाद और कीटनाशक के उपयोग से जमीन की उर्वरक क्षमता खो रही है। यह भूमि के लिए बहुत ही हानिकारक है और इससे तैयार खाद्य पदार्थ मनुष्य और जानवरों की सेहत पर बुरा असर डाल रहे है।
- रासायनिक खाद और कीटनाशक के उपयोग से मिट्टी की उर्वरक क्षमता काफी कम हो गई। जिससे मिट्टी के पोषक तत्वों का संतुलन बिगड़ गया है। इस घटती मिट्टी की उर्वरक क्षमता को देखते हुए जैविक खाद उपयोग जरूरी हो गया है।

प्राकृतिक खेती का महत्व

- भोजन के अधिकार पर संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट, 2017 में कहा गया है कि कृषि–पारिस्थितिकी विश्व की संपूर्ण आबादी को भोजन उपलब्ध कराने और उसका उपयुक्त पोषण सुनिश्चित करने के लिये पर्याप्त पैदावार देने में सक्षम है। ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं जहाँ गाँव प्राकृतिक खेती की ओर आगे बढ़ते हुए ग्रामीण जीवन में रूपांतरण ला रहे हैं तथा शहरों में भी प्राकृतिक खेती के सफल प्रयोग हो रहे हैं।
- बिना सरकारी सहायता के इन उपलब्धियों को देखते हुए कल्पना की जा सकती है कि यदि इसमें राज्य का सहयोग प्राप्त हो तो बड़ी संख्या में किसानों को लाभ मिल सकता है।
- हालांकि भारत सरकार प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिये लोगों को प्रोत्साहित कर रही है किंतु यह प्रोत्साहन प्रचार और जागरूकता के साथ–साथ सब्सिडी और आर्थिक स्तर पर भी होना चाहिये।
- भारत बड़ी मात्रा में उर्वरकों पर सब्सिडी देता है। यह सब्सिडी वर्ष 1976–77 की 60 करोड़ रुपए से बढ़कर वर्तमान में 75 हजार करोड़ रुपए हो गई है।
- भारत के सबसे बड़े आर्थिक बोझों में से एक सिंथेटिक उर्वरकों के लिये प्रदत्त केंद्रीय सब्सिडी रही है। इसकी तुलना में जैविक क्षेत्र को मात्र 500 करोड़ रुपए की सब्सिडी प्राप्त है।
- इसके अतिरिक्त, परंपरागत कृषि विकास योजना तथा उत्तर–पूर्वी क्षेत्र के लिये जैविक मूल्य श्रृंखला विकास अभियान के दायरे में अत्यंत सीमित क्षेत्र ही है। प्राकृतिक खेती के अंतर्गत मात्र 23.02 मिलियन हेक्टेयर भूमि है जो भारत में कुल कृषि योग्य भूमि (181.95 मिलियन हेक्टेयर) की मात्र 1.27 प्रतिशत है।

प्राकृतिक खेती के चार सिद्धांत

1. **पहला सिद्धांत है, खेतों में कोई जोताई नहीं करना। यानी न तो उनमें जुताई करना, और न ही मिट्टी पलटना:** धरती अपनी जुताई स्वयं स्वाभाविक रूप से पौधों की जड़ों के प्रवेश तथा केंचुओं व छोटे प्राणियों, तथा सूक्ष्म जीवाणुओं के जरिए कर लेती है।
2. **दूसरा सिद्धांत है कि किसी भी तरह की तैयार खाद या रासायनिक उर्वरकों का उपयोग न किया जाए:** इस पद्धति में हरी खाद और गोबर की खाद को ही उपयोग में लाया जाता है।
3. **तीसरा सिद्धांत है, निंदाई–गुड़ाई न की जाए। न तो हलों से न शाकनाशियों के प्रयोग द्वारा:** खरपतवार मिट्टी को उर्वर बनाने तथा जैव–बिरादरी में संतुलन स्थापित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। बुनियादी सिद्धांत यही है कि खरपतवार को पूरी तरह समाप्त करने की बजाए नियंत्रित किया जाना चाहिए।
4. **चौथा सिद्धांत रसायनों पर बिल्कुल निर्भर न करना है:** जोतने तथा उर्वरकों के उपयोग जैसी गलत प्रथाओं के कारण जब से कमजोर पौधे उगना शुरू हुए, तब से ही खेतों में बीमारियां लगने तथा कीट–असंतुलन की समस्याएं खड़ी होनी शुरू हुई। छेड़छाड़ न करने से प्रकृति–संतुलन बिल्कुल सही रहता है।

प्राकृतिक खेती के फायदे

1. किसानों की दृष्टि से लाभ

- भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है।
- सिंचाई अंतराल में वृद्धि होती है।
- रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से लागत में कमी आती है।
- फसलों की उत्पादकता में वृद्धि।
- बाजार में जैविक उत्पादों की मांग बढ़ने से किसानों की आय में भी वृद्धि होती है।

2. मिट्टी की दृष्टि से

- जैविक खाद के उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है।
- भूमि की जल धारण क्षमता बढ़ती है।
- भूमि से पानी का वाष्पीकरण कम होगा।

3. पर्यावरण की दृष्टि से

- भूमि के जलस्तर में वृद्धि होती है।
- मिट्टी, खाद्य पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में कमी आती है।

- कचरे का उपयोग, खाद बनाने में, होने से बीमारियों में कमी आती है।
- फसल उत्पादन की लागत में कमी एवं आय में वृद्धि
- अंतरराष्ट्रीय बाजार की स्पर्धा में जैविक उत्पाद की गुणवत्ता का खरा उतरना।

रासायनिक खेती और प्राकृतिक खेती के बीच अंतर

रासायनिक खेती	प्राकृतिक खेती
रासायनिक रूप से प्रबंधित मिट्टी में, पौधों के पोषक तत्वों की पूर्ति केवल अकार्बनिक स्रोत के माध्यम से की जाती है, बिना किसी कार्बनिक स्रोत के भोजन प्राप्त करने के लिए। यह अंततः मृदा–पारिस्थितिकी तंत्र को विकास माध्यम से वंचित कर देता है।	जैविक प्रबंधन में, खाद्य वेब संबंधों और तत्व चक्रण पर ध्यान केंद्रित किया जाता है जिसका उद्देश्य कृषि–पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता, संवहनीयता और होमोस्टैसिस (संतुलित संतुलन) को अधिकतम करना होता है।
अधिकांश पोषक तत्व जड़ क्षेत्र से बाहर निकल जाते हैं और फसल बेहतर जड़ लंगर के लिए आवश्यक पोषक तत्व को खो सकती है। इसी तरह रासायनिक रूप से प्रबंधित मिट्टी फसलों को अधिक संरचना समर्थन प्रदान नहीं करती है। उपरोक्त के संयोजन से फसल पकती है।	भौतिक (संरचना), रासायनिक (पोषक तत्व परिवर्तन और खनिजकरण) और जैविक गतिविधि (अपघटन) फसल की स्थिति और विकास के पक्ष में हैं। मिट्टी की जीवंतता फसल वृद्धि के लिए एक अच्छा विकास माध्यम और समर्थन प्रदान करती है।
रासायनिक रूप से प्रबंधित मिट्टी मिट्टी में अवशेषों को छोड़ती है और जल पर्यावरण प्रदूषण का कारण बनता है। कभी–कभी यह मानव पर्यावरण के लिए विषाक्त प्रभाव का कारण बनता है।	सभी प्रथाएं आपस में जुड़ी हुई हैं और अंतिम उत्पाद अपघट्य होगा। इसलिए पर्यावरण प्रदूषण का कोई कारण नहीं है।
अकार्बनिक इनपुट सामग्री महंगी होती है और उत्पादन और संचालन के लिए बहुत अधिक तकनीकी ज्ञान और निवेश की आवश्यकता होती है।	कार्बनिक इनपुट सामग्री कम खर्चीला स्रोत हैं, जो आसानी से उपलब्ध हैं और लागू करने में बहुत आसान है।

रासायनिक खेती और किसान

- छोटे किसान आजीविका और अस्तित्व के संकट से जूझ रहे हैं। किसान रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के उपयोग से जुड़ी कई समस्याओं का सामना कर रहे हैं।
- भारत के 86 प्रतिशत कृषक लघु व सीमांत कृषक हैं। रासायनिक कृषि कृषकों को ऋणग्रस्तता की ओर धकेलती है और उर्वरक कंपनियों को लाभ प्रदान करती है।
- सरकार प्रदत्त भारी उर्वरक सब्सिडी का लाभ लघु कृषकों को नहीं मिलता बल्कि उर्वरक निर्माता इसका लाभ उठाते रहे हैं।
- केरल राज्य में जैविक खेती पर वर्ष 2008 की रिपोर्ट के अनुसार, पिछले 50 वर्षों से केरल में रसायन गहन कृषि के आरंभ और इसके प्रचलन के परिणामस्वरूप उत्पादकता लगभग स्थिर हो चुकी है।
- उर्वरक, कीटनाशक और जल जैसी बाह्य निविष्टियों की उच्च मांग से प्रेरित कृषि के उच्च लागत की पूर्ति हेतु लिये गए ऋण के कारण किसान ऋण–जाल में फँस गए हैं। इसके परिणामस्वरूप किसानों द्वारा आत्महत्या की घटनाओं में वृद्धि हुई है।
- खाद्य एवं कृषि संगठन ने पुष्टि की है कि रासायनिक कृषि का संबंध कृषक ऋणग्रस्तता और आत्महत्याओं से है तथा यह भी रेखांकित किया है कि वर्ष 1997–2005 के बीच महाराष्ट्र राज्य में 30,000 किसानों ने आत्महत्या की।
- बंबई उच्च न्यायालय ने महाराष्ट्र में किसानों की आत्महत्या के कारणों को संबोधित करते हुए कहा कि कपास उगाए जाने वाले क्षेत्रों में आत्महत्या की अधिक घटनाएँ हुईं, जहाँ रासायनिक उर्वरकों का उपयोग किया गया था।
- सरकार की प्राक्कलन समिति की वर्ष 2015 की रिपोर्ट में रासायनिक खेती के प्रति वर्तमान नीति की निंदा करते हुए कहा गया था कि विद्यमान उर्वरक सब्सिडी व्यवस्था ने भारतीय कृषि का सर्वाधिक नुकसान किया है।

प्राकृतिक खेती के अनुभव

आम तौर पर माना जाता है कि रासायनिक खाद का प्रयोग न करने पर उत्पादन घटता है। विशेष तौर पर शुरु के सालों में, लेकिन यह पूरा सच नहीं है। अगर पूरी तैयारी के साथ प्राकृतिक खेती अपनायी जाए यानि कि पर्याप्त बायोमास हर प्रकार का कृषि अवशेष या कोई भी वनस्पति पते इत्यादि हो और पूरे ज्ञान के साथ समय पर सारी प्रक्रिया की जाए तथा अनुभवी मार्गदर्शक हो तो पहलें साल भी घाटा नहीं होता। अगर यह सब न हो तो पैदावार घट सकती है। परन्तु फिर भी तीसरे साल तक आते–आते उत्पादकता पुराने स्तर तक पहूँच जाती है। बाद के सालों में कुछ फसलो में उत्पादन काफी बेहतर भी हो सकता है। कुछ में थोड़ा कम भी हो सकता है। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि हमें किसी एक फसल के (मसलन गेंहूँ) के उत्पादन पर ध्यान न देकर कृषि से प्राप्त कुल उत्पादन और आय को देखना चाहिए। इस के साथ–साथ प्राकृतिक पद्धति में फसल की गुणवता अच्छी होने से बगैर किसी विशेष प्रमाण के भी स्थानीय बाजार में ही बेहतर भाव मिल जाते है। खर्च तो काफी घट ही जाता है। पानी की जरुरत भी घट जाती है। टयूब वैल होने के बावजूद खेती अपनाने वाले किसान केवल नहरी पानी से खेती कर रहे है।

कुल मिलाकर अनुभव यह है कि प्राकृतिक खेती अपनाने में लागत कम हो जाती है। परन्तू कुछ हद तक शुरु के समय को छोड़ कर न तो उत्पादन में कमी आती है और न किसान की आय में बल्कि इस तरह की खेती उत्पादन और आय दोनों में स्थिरता लाती है। सूखे व बाढें भी फसल में उतनी ज्यादा कमी नहीं आती है जितनी रासायनिक खेती में आती है। अगर उत्पादन में विशेष कमी नहीं होती तो उपभोगता को भी महँगी नहीं पड़नी चाहिए। आज के दिन बगैर जहर वाले जैविक उत्पाद काफी महंगे मिलते हैं परन्तु इसके पीछे कम उत्पादकता मुख्य कारण नहीं है। आज भी छोटे किसानों को तो आमतौर पर जैविक उत्पादकों के लिए बाजार भाव से लगभग 20 प्रतिशत ही अधिक कीमत मिल पाती है।

यह सब मनगढ़ंत नहीं है। देश विदेश के वैज्ञानिक इसका समर्थन करते हैं। रोम में 2007 में जैविक कृषि और खाद्य सुरक्षा पर एक अंतराष्ट्रीय सम्मेलन हुआ था। यह सम्मेलन संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ.ए.ओ.) द्वारा आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में 80 देशों से 24 शोध संसाधनो के 350 प्रतिभागी शामिल थे। इस अंतराष्ट्रीय सम्मेलन में इस प्रश्न पर विचार किया गया कि क्या ऐसी वैकलपिक व्यवस्था हो सकती है जो 2030 तक कृषि उत्पादकता में 56 प्रतिशत वृद्धि सुनिश्चित कर सके ? इस अंतराष्ट्रीय सम्मेलन की रपट के अनुसार वैकल्पिक कृषि में यह क्षमता है कि यह सुनिश्चत कर सके और विश्व को अन्न सुरक्षा उपलब्ध करा सके। केवल इतना ही नहीं अपितु पर्यावरण को भी कोई नुकसान न हो।

हमारे देश में भी महाराष्ट्र गुजरात कर्नाटक आदि राज्यों में बड़े पैमाने पर किसान इस खेती को सफलतापुर्वक अपना चुके है।

हैदराबाद के एक अंतराष्ट्रिय शोध संस्थान में (भूतपूर्व) प्रमुख वैज्ञानिक डॉ0 ओम प्रकाश रुपेला द्वारा 1999 में शुरु किये गये एक एक लंबी अवधी के 2.5 एकड में किये गये तुलनात्मक अध्ययन में यह पाया गया कि किसान को रासायनिक खेती के मुकाबले प्राकृतिक खेती में ज्यादा फायदा होता है। विशेष ध्यान देने वाली बात यह है कि यह परिणाम तब आये है जब जैविक और रासायनिक दोनो तरह के उत्पादन के लिए एक ही बाजार मुल्य लगाया गया।

पंजाब में भी कई साल पहले से शुरुआत हो चुकी है। हरियाणा में भी पूरी तरह से जहर रहित खेती के उदाहरण खास तरह के छोटे किसानों के उदाहरण अभी कम हैं। परन्तु कई जगहों पर टुकड़ों में वैकल्पिक खेती हो रही है। कहीं बिना कीटनाशक खेती हो रही है तो कहीं रासायनिक खाद के खेती हो रही है। जिंद जिले में कृषि वैज्ञानिक डॉ० सुरेश दलाल के अगुआई में कपास के कीटों के पहचान का काम कई सालों से चल रहा है। इसके चलते जींद के निडाना और आस पास के गाँवो में कई किसानों ने कपास में जिसमें आमतौर पर सबसे ज्यादा कीटनाशक का प्रयोग किया जाता है। कीटनाशक का प्रयोग बंद कर दिया गया है। 2010 की खरीफ की बुआई से हरियाणा में भी कई जगह प्राकृतिक खेती शुरु हो गए हैं।

हाँ एक दिक्कत है कि इस तरह की प्राकृतिक खेती सारा साल खेत में देखभाल मांगती है। शुरु में यह ज्यादा मेहनत भी मांगती है। तो इसका मतलब यह है कि गाँव में रोजगार के अवसर बढ़ते है। बेरोजगारी कम होती है। अगर पुरे साल खेत में काम रहता है तो मजदूर मिलने भी आसान हो जाते है। परन्तू दूर शहर में रह कर खेती कराने वाले या अंशकालीन किसान के लिए थोड़ा मुश्किल पड़ता है। केवल नौकरी के भरोसे खेती करने वाले के लिए उतनी अनूकुल नहीं है। जितनी वर्तमान की रासायनिक खेती। परन्तु शायद इस विधि का दोष न होकर गुण ही है कि खुद हाथ से करनें वाला ज्यादा फायदा में रहता है।